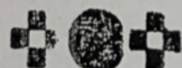
साधू संग त्यूं हृदय की, तम हर करत उज्यार ।
साधू संग सम जगत में, दाता और न जान ।
बसन्त भक्ति ज्ञान दे, हरत शोक अज्ञान ।१२।
साधू सम को जगत में, बसन्त नाहिं दलाल ।
ताड़ो बोध लगाय के, मेले दीन दयाल ।१३।
साधू संग है जगत में, बसन्त सम सोनार ।
टूटा मेले राम से, दे दे निज गुन सार ।१४।
बसन्त सर सम सन्त जन, पर उपकारी जान ।
तृष्णा प्यास बुझाय के, शान्ती देत महान ।१५।
बसन्त साधू वृक्ष सम, दया छाय जिह माहिं ।
अपने शिर पर कष्ट सह, सुख फल दें सब काहिं ।१६
साधू संग है मेघ सम, वचन बून्द बरसाय ।
मन धरती शीतल करे, बसन्त तपत बुझाय ।१७।
बसन्त देखा खोज कर, निज अनुभव के माहिं ।
सन्तन सम को जगत में, पर उपकारी नाहिं ।१८।

"कु संग"

बसन्त कांटा कुसंग है, केला साधू स्वभाव ।
प्रेम करे वह देत दुःख, देखो संग प्रभाव ।१।
मूर्ख नर के संग से मान हान नित होय ।
बसन्त पावक लोह संग, मुद्गर खावत सोय ।२।
ऊंच मनुष्य भी नीच संग, नीच होय सुन गाथ ।
बसन्त भीष्म ने हरी, गो दुर्योधन साथ ।३।
नीचन का संग अल्प भी, करे बहुत गुण नाश ।
बसन्त जिम गुण दूध के, कर है दधी विनाश ।४।
न.च संग बुद्धि नीच हो, उत्तम उत्तम संग ।
बिलमंगल रविदास वा, बसन्त पढ़ प्रसंग ।५।
दुर्जन के संग बैठि जन, बोल न तांसे बात ।
दाग लगावे दुःख दे, बसन्त सो दिन रात ।६।
दुष्ट मित्र मत कीजिये, सुनि लीजे इतिहास ।

लोग देत संसार सुख, सन्त ब्रह्म सुख देत ।
बसन्त बदला लेत नर, सन्त न बदला लेत ।१६।
दर्शन परसन सन्त का, स्मरत कीर्तन बात ।
बसंत पाञ्चों करत है, पावन जन को तात ।२०।
बसन्त दर्शन सन्त का, पाप करत प्रहार ।
तपत बुझाये नयन की, आनन्द देत अपार ।२१।
बसन्त परसन सन्त का, विध्न करत सब दूर ।
कर्म रेख को काट कर, देत सूख भरपूर ।२२।
बसन्त स्मरण सन्त का, सगुण समाधी जान ।
जग विक्षेप मिट जात पुनि, आनन्द होवत भान ।
बसन्त कीर्त्तन सन्त का, मेटत विषय विकार ।
देवो सम्पति गुणन का, मन में हो विस्तार ।२४।
बसन्त बोलन सन्त का, मन को देत हुलास ।
तिमर हरे अज्ञान की, कर आतम प्रकाश ।२५।



काक संग ज्यों हंस का, बसन्त भया विनाश ।७।
बाल्मीक संग भील के, भील भया जग ज्ञान ।
बसन्त साधू संग से, होये ऋषि महान ।८।
मूर्ख का संग जगत में, बसन्त देत क्लेश ।
ज्यों रावण के संग से, बाँधा गया जलेश ।९।
बसन्त दुर्जन सांप सम, तांसे कर ना प्यार ।
दूध पिये विष देह फल, मानत ना उपकार ।१०।

"वाणी का अंक"

रोचक वाणी श्रवण कर, मन में धर अनुराग ।
सन्त संग सत् कर्म कर, दुष्कर्मों को त्याग ।१।
वचन भयानक श्रवण कर, धार विवेक विराग ।
बसन्त तजे जग राग को, हरि से कर अनुराग ।२।
वचन यथार्थ श्रवण कर, तजे देह अध्यास ।
बसन्त आतम ज्ञान पा, करो ब्रह्म में वास ।३।

वाणी सुन पढ़ वेद की, जो जन करत विचार ।
बसन्त सो निज ज्ञान पा, पावत शांति अपार ।४।
वेद वचन को श्रवण कर, करत विचार न जोय ।
बसन्त ऐसे मूंढ को, मुक्ति कहां से होय ।५।
वेद वचन गुरुदेव से श्रवण कर हर वार ।
मनन निदिध्यासन करे, पाय निजातम सार ।६।
पढ़ कर शास्त्र वेद जो, करत जगत में राग ।
बसन्त सो नर मूंढ है, बिन विवेक मंद भाग ।७।
सुनकर पढ़कर वेद जो, छोड़त नाहिं विकार ।
बसन्त ऐसे मनुष्य को, वारों वार धिक्कार ।८।
वेद सन्त गुरुदेव की, वाणी को कर याद ।
बसन्त इन पर अमल कर, पाओ मन अह्लाद ।९।
सन्त वचन सत् जान तुम, धारो हृदे माहिं ।
बसंत मन निश्चल करो, इत उत भटको नाहिं ।१०
सत्पुरुषों के वचन पर, राखत जो विश्वास ।

बसन्त तांके शीघ्र ही, कारज हो सब रास ।११।
सन्त वचन मेटत सदा, तन मन के सब पाप ।
बसन्त शीतल चित्त करे, हरत सकल संताप ।१२।
सत्पुरुषों के वचन नित, शान्त सुमति सुख देत ।
बसन्त काम रु क्रोध मद, दुःख द्वन्द हर लेत ।१३।
सद्गुरु के सत् वचन से, प्राप्त हो निज ज्ञान ।
बसन्त भेद भ्रान्त पुनि, दूर होत अज्ञान ।१४।
सद्गुरु के सत्वचन सुन, धारो मन संतोष ।
बसन्त समता में रहो, तजे राग पुनि रोष ।१५।
वेद सन्त गुरु वचन को, पढ़त सुनत जो नीत ।
बसन्त भवसिन्धु तरत सो, पाय मन पर जीत ।१६
श्रद्धा प्रेम विराग से, सुनत वचन जन जोय ।
बसन्त पुनि अभ्यास कर, होत अमर नर सोय ।१७
सन्त वचन सुन समझकर, पाय यथार्थ ज्ञान ।
बसन्त तज जग वासना, धरो ब्रह्म का ध्यान ।१८

ध्यान धरे निज ब्रह्म का, मन स्थिर कर लेह ।
बसन्त जीवन मुक्ति पा, पाओ मुक्ति विदेह ।१९।
जैसी श्रद्धा ईश में, तैसी गुरु में होय ।
बसन्त वचन वेदान्त के, समझत है नर सोय ।२०।
बून्द बून्द के पढ़त जिम, बसन्त घट भर जात ।
विद्या धन पुनि धर्म तिम, बढ़त अल्प से तात ।२१।
बहु पुस्तक के पढ़न से, पण्डित होत न कोय ।
बसन्त रहनी रहत जो, पण्डित कहिये सोय ।२२।
बसन्त राग न रोष जिह, लोभ मोह अहंकार ।
पण्डित तांको कहत हैं, जा मन सत् वीचार ।२३
बसन्त सुनकर समझ कर, रहनी रहत न जोय ।
वेद शास्त्र के पढ़न से, मुक्ति न पावत सोय ।२४।
सन्त वचन व्यर्थ नहीं, बसन्त कबहूं जात ।
कोटि जन्म के बाद भी, फल देते हैं तात ।२५।

"वचन विचार"

बसन्त नित वीचार के, मृदु वचन तुम बोल ।

सत्य प्रिय ना कह सको, तो मत मुख को खोल ।१।
बसन्त बोलत मूण्ढ नर, पशु सभ दिन औ रात ।
जामें सारु विचार नहिं, बकैं भेक ज्यों बात ।२।
बसन्त कूकर काक का, बोल न भावत काहिं ।
कोयल मैना बोल को, सुनि सुनि सब हर्षाहिं ।३।
बसन्त ऐसा बोलिये, जिससे होवे प्यार ।
ऐसी बात न बोलिये, जासे बाढ़े रार ।४।
वचन वचन का भेद है, वचन वचन में भाव ।
बसन्त तांको समझ के, बोलो सरल सुभाव ।५।
ऐसी वाणी बोल तूं, जांसे हो उपकार ।
बसन्त पुनि मीठी लगै, सबके रिदे मंझार ।६।
बसन्त वाणी का अहैं, भूषण च्यार प्रधान ।
सांचा स्वल्प मृदु पुनि, चौथा हितकर जान ।७।
वाणी चार प्रकार की, दीनो तो करतार ।
परा पश्यन्ती मध्यमा, वेखर जान उदार ।८।
परा मूल में रहत है, पश्यन्ति हृदय आहिं ।

बसन्त मध्यम कण्ठ में, वेखर है मुख माँहि ।९।
पहले हृदय कण्ठ में, बसन्त वचन विचार ।
पीछे उत्तम वचन को, मुख से करो उच्चार ।१०
बसन्त मीठे वचन से, प्रसन्न होवत पीव ।
कडुवे और कठोर से, दुःख पावत है जीव ।११।
बसन्त तज बकवाद पुनि, गाली ना किस देह ।
शान्त रहो कटु वचन सुनि, गुरु शिक्षा है एह ।१२।
मौन करो अपशब्द से, साचा स्वल्प बोल ।
अन्तर अनहद नाद सुनि, बसन्त हृदय खोल ।१३।
मुख से वृथा बोल नहिं, हृदय हरि गुन गाय ।
बसन्त हरि गुन गाय के, पीय को लेत रिझाय ।१४।
मीठे हित कर वचन से, सब अपना बन जात ।
बसन्त रहत न द्वन्द दुःख, जंह तंह हो कुशलात ।१५
सत्य वचन नित बोल तू, कहो न झूठी बात ।
बसन्त झूठे कहन से, प्रीति रीति घट जात ।१६।

बसन्त सत्य के बोलते, हृदय साचा होय ।
झूठा मन हो झूठ से, कर विश्वास न कोय ।१७।
बसन्त हरि का नाम रट, मृदु वचन पुनि भाख ।
निन्दा किसकी ना करो, यह शिक्षा मन राख ।१८

"काल"

बसन्त मरना याद कर, भूल न कबहूं जाय ।
जग से होय उदास तुम, राम नाम गुन गाय ।१।
मौत भुलाए पाप हो, याद किये नश पाप ।
बसन्त तांते मौत को, याद करे हर ताप ।२।
चार कुण्ठ में बजत है, बसन्त काल निशान ।
गाफिल तुम सुनते नहीं, बहुरे कीने कान ।३।
बसन्त तेरे देखते, जगत चला यह जात ।
इक दिन तू भो जायेगा, छोड़ सर्व को तात ।४।
बसन्त तुम समुझत नहीं, धर कर मन में चेत ।

सन्त करत उपदेश अस, काल कटे जग खेत ।५।

बसन्त तेरा को नहीं, साथी इस जग माँहि ।
मात पिता धन दार सुत, संग न चलते काँहि ।६।

बसन्त आये साथ ले, पाञ्च तत्त्व की देह ।
वह भी तो संग ना चले, जांसे करत स्नेह ।७।

बसन्त जब इस जीव को, ले जाता है काल ।
लोग कुटुम्ब सब देखते, होत न को रखपाल ।८।

बसन्त जग के मित्र सब, रोवत पीटत माथ ।
नहीं छुड़ावत काल से, नहिं पुनि चालत साथ ।९।

काल निकट नित रहत है, तुम जानत हो दूर ।
बसन्त शिर पर बैठ के, श्वास करत चकचूर ।१०।

तू नहिं देखत काल को, तुम को देखत काल ।
बसन्त दिन पूरे भये, मारेंगे तत्काल ।११।

श्वास श्वास कर आयु सब, हरत काल प्रवीन ।
बसन्त तजत न काहूं को, करत सर्व को खीन ।१२।

काल महा विकराल है, कठिन काल की धार ।
तांसे कोऊ ना बचे, किये उपाय अपार ।१३।
राव रंक सुर असुर नर, वीर धीर गम्भीर ।
बसन्त ठहुर न सकत को, जब मारे जम तीर ।१४
बसन्त बल बुद्धि औषधी, तेग तमञ्चा बाण ।
चलत न आगे काल के, जब आ लेते प्राण ।१५।
बड़े बड़े बलवान जे, करते बहु अभिमान ।
बसन्त वे भी काल ने, मार किये मैदान ।१६।
आस पास सब लोग पुनि, देख रहे परिवार ।
बसन्त सबके बीच से, ले जावत जम मार ।१७।
भूल न कबहूं कीजिये, इस तन पर विश्वास ।
बसन्त इक दिन होय है, यह तन काल ग्रास ।१८।
क्यों तुम गाफिल हो रहे, विषय से कर राग ।
काल खड़ा है शीस पर, बसन्त होय सुजाग ।१९।
काल शिकारी करत है, जग वन मांहि शिकार ।

बसन्त सबको हनत है, तीर रोग,का मार ।२०।

काल बड़ा बेतरस है, दया करत कब नाहिं ।
बसन्त मारत सर्व को, ना छोड़त है काहिं ।२१।

बसन्त सब जीवन चहैं, मरना चहैं न कोय ।
तो भी काल न छोड़हीं, अवश्य संघारे सोय ।२२।

बसन्त कालधमाल सुनि, भागे बहु तज देश ।
काल न किसको छोड़ते, देश और प्रदेश ।२३।

सो नर बाचैं काल से, जो ले हरि की शाम ।
बसन्त हरि की शरन से, काल करे प्रणाम ।२४।

बसन्त तांते रात दिन, स्मरो हरि का नाम ।
काल पीड़ व्यापे नहीं, होवैं सुख विश्राम ।२५।

"समय का प्रभाव"

बसन्त है संसार में, समय बड़ी बलवान ।
अपने वश कर सर्व को, सुख दुःख देत महान ।१।

बसन्त जब ही जीव का, समय होत अनुकूल ।
देत शत्रु भी परम सुख, शूल होत है फूल ।२।
बसन्त जब इस मनुष्य का, समय होत प्रतिकूल ।
मात पिता सुत दार मित, होत शूल ते शूल ।३।
घटत बढ़त है समय पा, रवि शशि पुनि दिन रात ।
बसंत इक रस रहत नहिं, सुख दुःख तन मन तात ।
यह तन होता समय पा, बालक बूड़ा ज्वान ।
समय पा बदलत सबी, बसन्त सकल जहान ।५।
नारायण भी समय पा, धारत रूप अनेक ।
नृसिंह मच्छ कच्छ आदि का, बसन्त फिर हो एक ।६
एक समय श्री रामजी, गये जनकपुर माँहि ।
धनुष तोड़ ले सीय को, आये अयोध्या पाँहि ।७
इक दिन लक्ष्मण सीय युत, राम लीन बनवास ।
बसन्त सोये पत्थर पर, खाये बन फल खास ।८।
इक दिन सीता ले गये, रावण लंक मंझार ।

राम गया पुल बांध के, दीने असुर संहार ।९।
बसन्त बैठे राज्य पर, एक समय रघुराज ।
देखे दु:ख सुख बार बहु, सीय सहित सुरराज।१०।
रावण बांधा एक दिन, काल खाट के साथ ।
बसन्त इक दिन काल ने, काट दिये दस माथ ।११
तारा धोवे वस्त्र पुनि, लाश जलावे राव ।
रोहत माली बन गया, देख समय प्रभाव ।१२।
बसन्त देखो एक दिन, श्याम गया रण छोड़ ।
नाम पड़ा रणछोड़ तब, देख समय का जोर ।१३।
एक समय श्रीकृष्ण ने, कंस केस को मार ।
जरासिंध को जीत के, बसन्त की जयकार ।१४।
पाण्डव बन में भये दु:खी, कौरव करते राज ।
उलटा फेरा आ गया, देख समय के काज ।१५।
बसन्त जीते एक दिन, अर्जुन देश अशेष ।
इक दिन भीलों लूटकर, दीना बहुत क्लेश ।१६।

झूलत छत्र सुदोन पर, राजा मांगत भीख ।
बसन्त शक्ति समय की, कहं मिर्ची कहं ईस ।१७।
दु:ख पावत है भक्त जन, पापी पुनि सुख पाय ।
देख सनय को शक्ति को, बसन्त मन घबराय ।१८
समय पाय सुख होत है, बसन्त दुख भी होय ।
सुख दुःख में तुम सम रहो, मत हंसो मत रोय ।१९
इक रस है निज आतमा, तांसे कर नित हेत ।
बसन्त चंचल जगत को, त्यागें होय सचेत ।२०।

कर्म का अंक

मुक्ति ज्ञान से होत है, ज्ञान भक्ति से होय ।
भक्ति कर्म से होय है, करो कर्म शुभ जोय ।१।
विहित निषिद्ध दो भान्ति का, कर्म वेद के माहिं ।
विहित कर्म कर प्रेम से, निषिद्ध करो कब नाहिं ।२
करते वेद निषेध जिस, निषिद्ध कर्म सो जान ।

करहिं वेदविधान जिस, विहित कर्म सो मान।३

हिंसा चोरी ना करो, किसको दिल न दुःखाय।
बसन्त मधु मति पीजिये, मांस मच्छी मति खाय।
झूठ कपट बल छल ठगी, बसन्त कर मति काहिं।
सत्य सरल समता सदा, राखो हृदय पाहिं।५।
धोखा किसको देह ना, वचन करो मत भङ्ग।
द्रोह दगा से दूर हो, भूल न जाय कुसङ्ग।६।
पर नारी की प्रीति तज, वैश्या का संग छोड़।
बसन्त इनके संग से, मिलत नरक दुःख घोर।७।
जूआ कबहूं न कीजिये, जूआ बहु दुःख देत।
बसन्त धैर्य्य धर्म धन, यश सुख सब हर लेत।८।
फाइश खेल न देखिये, देखो धर्मी खेल।
बसन्त धारे धर्म को, हरि से मन को मेल।९।
फाइश गाना गाय सुनि, मन चंचल हो जात।
गोविन्द के गुन गाय तुम, निश्चल कर मन तात।

दु.खमय सम्पति आसुरी, देवी सुखमय जान ।
देवी गुन धारन करे, बसन्त पा कल्यान ११।
नित नैमित्तिक प्रायश्चित, काम्य कर्म ये चार ।
बसन्त वेद विहित कर्म, करलो कर वीचार ।१२
स्नान संध्या पाञ्च यज्ञ, पूजा पाठ अरु ध्यान ।
बसन्त नित्य कर्म करो, तजि फल पुल अभिमान ।
मात पिता गुरु सन्त पुनि, अतिथी ब्राह्मण देव ।
बसन्त इनकी नित करो, श्रद्धा से तुम सेव ।१४।
निमित पाय नैमित्तिक कर, कर्म सबी हित लाय ।
त्यागे मन की वासना, बसन्त आनन्द पाय ।१५।
कर्म प्रायश्चित तुम करो, पाप नाश के हेत ।
गंगा नावन नाम जप, बोय धर्म का खेत ।१६।
कर्म सकामी देत दुःख, जन्म मरण को नीत ।
बसन्त तज फल कामना, कर्म करो मन जीत ।१७
पापी जावत नरक में, धर्मी स्वर्ग जात ।

भक्त जात वैकुण्ठ में, ज्ञानी ब्रह्म समात ।१८।
कर्म प्रारब्ध ज्ञान में, बसन्त होत न नाश ।
छूटे बाण वत् कर्म ये, भोगे होत विनाश ।१९।
बसन्त ब्रह्म विज्ञान से, सञ्चत् कर्म मिट जात ।
स्वप्न कर्म जिम जागते, रहत न को सुन तात ।२०
वर्तमान के कर्म का, ज्ञानी लगे न लेप ।
पद्म पत्र जिम तोय में, बसन्त रहत अलेप ।२१।
धर्म कर्म धन भोग को, बसन्त है धिक्कार ।
शान्ति जिसीसे ना मिले, मिलहिं दुःख अपार ।२२
कर्म सकामी भोग धन, तीनों को कर त्याग ।
बसन्त मुक्ति करन हित, सत्संग हरि अनुराग ।२३

"प्रारब्ध"

बसन्त जिसका है जहां, पूरब कर्म संजोग ।
तहां जाय सो अवश्य ही, भोगत सुख दुःख भोग ।

बसन्त जो मस्तक लिखा, अवश्य होत है सोय।
यत्न करे शत कोटि जो, मेट न साकत कोय।२
बसन्त जिसको जगत में, जैसी होवन हार।
तैसी तिस पत होत है, मेटत ना करतार।३।
जैसा बोये बीज को, तैसा ही फल होय।
कीकर बोये खात नहिं, आम्र फल को कोय।४।
बसन्त जैसी होवनी, तैसी ही बुद्धि होय।
लाख बार समझाय को, तौ नहिं मानत सोय।५।
भावी के वश होत बुद्धि, बुद्धि वश भावी नाहिं।
बसन्त गयो रघुनाथ वन, कंचन मृग के पाहिं।६।
नीच ऊंच गति कर्म से, पावत है सब लोग।
बसन्त हरि सब जीव को, देत कर्म फल भोग।
जैसे गौ का वत्स ही, जाय मिले निज मात।
बसन्त तैसे कर्म भी, कर्त्ता के ढिग जात।८।
काल पाप कर बीज जिम, बसन्त उपजत खेत।

तैसे नर को कर्म भी, समयपाय फल देत ।९।
बसन्त भावी जो मिटे, तो दुख कोय न पाय ।
भावी वश नल राम ने, रुदन कीन वन जाय ।१०।
शोक न कीजे विपत में, हर्ष न सम्पत्ति पाय ।
दोनों फल निज कर्म का, बसन्त है सत् भाय ।११
मन चाहत होवै नहीं, अन चाहत जा होय ।
वेद सन्त अस कहत हैं, बसन्त भावी सोय ।१२।
बसन्त देखो रंक को, होवहिं पुत्र अनन्त ।
एक नहीं धनवान घर, यह भावी बलवन्त ।१३
जो भूखा तिंह मिलत नहिं, भोजन बसन्त देख ।
अब भूखे को मिलत बहु, देख कर्म की रेख ।१४
बसन्त पापो भाग से, पावत भोग महान ।
भाग बिना नहिं भोग सुखु, पावत धीर सुजान ।
बसन्स जड़ बुद्धिमान नर, कायर पुनिबलवान ।
सुखु दुःखु भोगत कर्म से, करते वेद बख्यान ।

दुश्मन भी सुख देत हैं, जो भावी अनुकूल।
बसन्त देत न मित्र सुखु, जो विधि प्रतिकूल।
विद्या सेवा जाति कुल, शील न अस फल देत।
बसन्त पूर्व पुण्य जस, जीवहिं फल प्रदेत।१८।
मनुष्य जन्म कुल राज धन, विद्या आयु अरोग।
बसन्त पूर्व कर्म से, इनका होत संजोग।१९।
बसन्त निशदिन कीजिये, पुण्य कर्म मन लाय।
पाप कर्म मत कीजिये, केवल मन के भाय।२०।
बसन्त भावी मिटत नहिं, भोगत है सब कोय।
नीलकण्ठ नगना फिरे, हरि अहि सेजा सोय।२१
रवि शशी पीड़त ग्रहकर, गज भुजंग बंध जात।
बसन्त पण्डित दरिद्री, देख भाग की बात।२२।
हर्ष मनावत लोक सब, मिलत राम को राज।
बसन्त तांको बन मिला, देख दैव के काज।२३।
जो विधि लिखा ललाट में, सो भोगत नर दीख।

बसन्त पाण्डव वीरवर, वन में मांगत भीख ।२४।
बसन्त भावी से भये, भील बहुत बलवान ।
अर्जुन निर्बल हो गया, भारत का प्रमाण ।२५।
बसन्त धर्मी मांगते, पापी करते राज ।
लाश जलावे हरिश्चन्द्र, देख कर्म के काज ।२६।
सत्यवन्ती दुःख पावती, कुसती करे श्रृङ्गार ।
बसन्त सुखु दुःखु भाग से, भोगत यह संसार ।२७।
जिस नर की जिस हाथ, बसन्त मृत्यु होय ।
तांको मेटत कोय नहिं, कोट यत्न कर जोय ।२८।

"पुरुषार्थ"

पुरुषार्थ कर बनत है, जग में नरका भाग ।
बसन्त तांते यत्न कर, पुण्य कर्म में लाग ।१।
बसन्त उद्यम करन से, निर्धन हो धनवान ।
दीन मनुष्य ही देवता, कायर हो बलवान ।२।

जो जन राखे भाग पर, उद्यम करत न कोय ।
बसन्त धन यश मान सुख, कबहूं न पावत सोय ।३
बसन्त नित उद्यम करो, आलस को तुम त्याग ।
उद्यम से ही बनत है, बसन्त सब का भाग ।४।
उद्यम बिन होता नहीं, बसन्त किसका काज ।
ज्यों बोये बिन मिलत नहिं, खेती माहिं अनाज ।।
उद्यम जैसा जगत में, सांचा मित्र न कोय ।
आलस्य सम ना शत्रु को, बसन्त जग में जोय ।।
पुरुषार्थ कर जगत के, बसन्त सब सुख पाय ।
पुरुषार्थ बिन खात नहिं, भोजन शेर अघाय ।७।
आलस्य कर कहु कौन को, मिलत राज्य सुख मान ।
पुरुषार्थ से पुरुष ही, बसन्त हो प्रधान ।८।
उद्यम से शत याग कर, मनुष्य इन्द्र पद पाय ।
बसन्त भोगत सर्व सुख, कहत वेद मुनिराय ।९।
पुरुषार्थ कर चलत है, बसन्त सब व्यवहार ।

बिन पुरुषार्थ देखले, मिलत न कांहि अहार।१०
पुरुषार्थं बिन भाग नहिं, भाग बिना सुख नांहि।
बसन्त तांते रात दिन, उद्यम कर जग मांहि।११।
उद्यम से शुभ कर्म हो, उद्यम से हो ज्ञान।
उद्यम कर के हो मिले, बसन्त श्री भगवान।१२।
पुरुषार्थं ही पुरुष का, उत्तम कर्त्तव्य जान।
आलस्य में बहु दोष हैं, कहते वेद पुरान।१३।
बसन्त उद्यम करन से, जो कार्यं नहिं होय।
तो भी उद्यम ना तजो, फिर फिर करिये सोय।१४
बसन्त जो नर करत है, उद्यम धैर्य्यं साथ।
सो निश्चय फल पावहिं, ग्रन्थों की ये गाथ।१५।
पुरुषार्थं के करत ही, विघ्न पड़े जो लाख।
बसन्त धैर्य्यं न तजत जो, तांकी सुर जय भाख।१६
मधुसूदन मुनि धैर्य्यं से, कीन उद्यम नव बार।
बसन्त हरि जप ध्यान धर, पाया दिव्य दीदार।१७

धैर्य्य श्रद्धा प्रेम विधि, राखो उद्यम मांहि ।
बसन्त तो फिर जगत में, दूरव तु कच्छु नांहि ।१८
मिलत भाग से काम धन, तामें कर संतोष ।
पुरुषार्थं से पाय तूं बसन्त धर्मं रु मोष ।१६।

"एकता और फूट"

देत सर्व सुख एकता, फूट देत दुःख नीत ।
बसन्त तांते प्रेम से, करो एकता मीत ।१।
पाप कर्म के करन हित, किसकी कर न सहाय ।
देश धर्म के रक्षा हित, बसन्त इक हो जाय ।२।
बसन्त एकहिं काक पर, विपत्ति पड़ जब आय ।
देखो तांको काक सब, मिल कर करत सहाय ।३।
अल्प वस्तु के मेल से, कार्य होय महान ।
जिम तृणों से दाम हो, बांधे गज बलवान ।४।
तागों के मेलाप से, बसन्त वस्त्र होय ।

नंगे तन को ढापके, शीत वात दे खोय ।५।
बसन्त मिलते तीन, जब दीपक बाती तेल ।
रोशन घर में होय तब, होत तिमर बिन मेल ।६।
जिम इन्द्रियों के मेल बिन, चलत न तन व्यवहार ।
बसन्त तिम मेलाप बिन, चलत न यह संसार ।७।
बसन्त मिल कर वृक्ष बहु, बाग बनत जग माहिं ।
एक अकेला पेड़ बढ़, शोभा पावत नाहिं ।८।
माटी चूने ईंट के, मिलने से मठ होय ।
बसन्त बनत न एकते, करे जतन बहु कोय ।९।
पाञ्चों अंगुली मिलत जब, तब होते सब काज ।
बसन्त प्रत्यक्ष देखले, इक से बजत न साज ।१०।
बसन्त लक्ष्मण राम मिल, पुनि कपि सेन बटोर ।
मार दशानन सोय ले, आये अपनी ठोर ।११।
बसन्त कीनी एकता, कृष्ण और बलराम ।
कंसादिक बहु दैत्य हनि, प्रसिद्ध कीना नाम ।१२

देखो लकड़ी एक को, तोड़त है सब कोय ।
बसन्त तोड़ न सकत को, जो बहु इकठी होय ।।
पाञ्च मनुष्य के मेल को पञ्च कहत जग मांहि ।
बसन्त वे जो बात कह, मानत है सब ताहिं ।१४
बसन्त पाण्डव मेल से, कृष्ण अपना कीन ।
मारे कौरव सेन को, पाये राज नवीन ।१५।
बसन्त देखो भ्रात दो, सुन्द उपसुन्द बलवान ।
आपस में लड़कर मरे, फूट अती दुःखदान ।१६।
बसन्त कहते सन्त सब, फूट चोरी जग जान ।
मरगै बाली फूट से, रावण के गै प्रान ।१७।
बसन्त देखो फूट से, गया हिन्द का राज ।
लीना फिर मेलाप कर, गांधी ने स्वराज ।१८।
पिता पुत्र गुरु शिष्य, पुनि, दम्पति भ्राता दोय ।
बसन्त मिलते होत सुख, फूट अति दुःख होय ।१९।
बसन्त मन में प्रेम धर, कर सबसे मेलाप ।

सबको सुख देते रहो, दे न किसे संताप ।२०।
वैर विरोध कर ईर्षा, किसको मत दुःख देह ।
बसन्त अपना रूप लख, सब से करो स्नेह ।२१।
तोड़त जो मेलाप को, फूट बीच में पाय ।
बसन्त सोई नीच नर, नीच योनि में जाय ।२२।
घर नगर प्रदेश में, सबका मेल मिलाय ।
बसन्त वैर विहाय के, शान्ति प्रेम बढ़ाय ।८३।
श्रुति शब्द को मेल के, बसन्त लाय समाधि ।
जीव ब्रह्म को एक कर, आनन्द पाय अगाधि ।2४।

"सुख और दुख"

सुख स्वरूप इक आतमा, सो है ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त तां बिन जगत सब, है अति दुःख का कूप ।१
ना सुख विद्या के पढ़े, ना सुख अविद्या माँहि ।
बसन्त सुख है ज्ञान में, जां में दोनों नाँहि ।८।
ना सुख है धनवान को, ना निर्धन सुख पाय ।

बसन्त जिहं सन्तोष है, सो सुख माँहि समाय ।।
ना सुख सुन्दर तीय में, ना सुख तांके त्याग ।
बसन्त निर्मल बुद्धि से, सुखु पावत बड़ भाग ।।
ना सुख होते पुत्र के, ना सुख सुत बिन जान ।
बसन्त सुत विज्ञान से, सुख पावत इन्सान ।५।
ना सुख है परिवार में, ना सुख बिन परिवार ।
सुख है देवो गुणन में, बसन्त कह निर्धार ।६।
ना सुख धन्धे करन में, बिन धन्धे सुखु नाँहि ।
बसन्त केवल सुख है, हरि भजन के माँहि ।७।
बसन्त ना सुख शयन में, ना सुख जागे होय ।
है सुख सहज समाधि में, जामँहि दुःख न कोय ।।
बसन्त ना सुख वाद में, ना सुख साधे मौन ।
जो बोलत वीचार से, सो पावत सुख भौन ।।
बसन्त ना सुख हंसन में, ना सुख रोने माँहि ।
निश दिन इक रस रहत जो, सो सुख माँहि समाँहि ।

शुभ कर्मो के करन में, बसन्त मन मुरझात ।
निशदिन खोटे कर्म को, करते बहु हर्षात ।२५।
मन ठग ने इतने ठगे, जांका आर न पार ।
बसन्त इससे जो बचे, जो सुमरे करतार ।२६।
मन कपटी के कपट से, बाच न साकत कोय ।
हरि कृपा से जो जगे, बसन्त बाचे सोय ।२७।
बसन्त मन के फेर को, जान सके ना वोर ।
विरला को नर जान है, ज्ञानवान गम्भीर ।२८।
मन ही लोभ दिखाय के, करवावत बहु पाप ।
बसन्त पहले सूख दे, पीछे बहु संताप ।२९।
मन कहता कछु और है, करता है कछु और ।
बसन्त तांको समझ कर, मन पाछे मत दौड़ ।३०।
मन के पीछे जो चले, सो नर दुःख को पात ।
बसन्त गुरुमति जो चले, सो सुख माहिं समात ।
बसन्त कबहुं न कीजिये, इस मन पर विश्वास ।

यह मन धोखेबाज है, करत अनेक विलास ।३२।
वेद शास्त्र मुनि कहत हैं, मन के मते अनेक ।
बसन्त तांते राम भज, त्यागे मन की टेक ।३३।
बन्ध मोक्ष का हेतु मन, नहिं तन इन्द्रिय प्रान ।
बसन्त आतम मुक्त है, ग्रन्थ कहत अस ज्ञान ।३४।
मन को ममता बंध है, निर्ममता है मोक्ष ।
बसन्त तांते ममत तज, पाय ज्ञान अपरोक्ष ।३५।
मन का बान्धन जान इक, विषयों का अनुराग ।
बसन्त चाहत मोक्ष जो, हरि भज विषय त्याग ।३६
शुद्ध अशुद्ध दो भान्ति का, बसन्त मन पहिचान ।
वेद ग्रन्थ अस कहत हैं, तांकों जान सुजान ।३७।
बसन्त शुद्ध मन जान सो, जामें पाप न ताप ।
विषय वासना छोड़ नित, करत हरी का जाप ।
बसन्त हरि से विमुख हो, चाहत विषय विकार ।
जान अशुद्ध मन सोय जो, करत पाप अहंकार ।३९

बसन्त मन पावन करो, साबुन शब्द लगाय ।
प्रेम नीर से धोय के, अविद्या मैल मिटाय ।४०।
मैले मन में होत नहिं, बसन्त हरि दीदार ।
जब मन शुद्ध हो तब मिले पूर्ण ब्रह्म अपार ।४1।
शुद्ध मन साक्षी रूप है, साक्षी ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त निश्चय जान तूं, एह सिद्धान्त अनूप ।४८।
बसन्त शुद्ध मन कीजिये, धारे श्रेष्ठाचार ।
ब्रह्म रूप सब जगत है, यह विवेक उर धार ।४३।
जैसा मन का भाव हो, तैसा जग दरशाय ।
तांते मन के भावको, बसन्त शुद्ध बनाय ।४४।
मन हस्ती जिम फिरत है, विषय भोग बन माहिं ।
कुण्डा ज्ञान लगाय के, बसन्त वश कर ताहिं ।४५।
मन विषयों के संग से, बसन्त हो मस्तान ।
भूल जात निज ज्ञान को, करत देह अभिमान ।४६
मन के मारे मर गये, देव दनुज नर भूप ।

बसन्त सो ना मरत जो, जानत आतम रूप ।४७।

श्वास धनुष में पाय कर, गुरु मंत्र का तीर ।
निशदिन मन को मारते, बसन्त संत सुधीर ।४८।

बसन्त मन को मार तूं, लेहि ज्ञान तलवार ।
अपना आप बचाय पुनि, ढाल विराग सुधार ।४९।

बसन्त शम दम साधि के, पहले मन को जीत ।
पीछे निज स्वरूप में, मनको लाओ मीत ।५०।

जैसा मन यह मीत है, तैसा अवर न जान ।
विषय छोड़ जो नित गहे, बसंत आतम ज्ञान ।५१।

मन दुश्मन बहु देत दुःख, बसन्त बिन वीचार ।
विवेक से पुनि मित्र हो, देता सूख अपार ।५२।

रे मन विषवत् त्याग दे, जग के विषय विलास ।
बसन्त हरि का ध्यान धर, पाओ पद अविनाश ।५३

रे मन तू शुद्ध रूप है, अपना आप विचार ।
त्यागे तम अहंकार को, पाय निजातम सार ।५४

माया ममता मोह तज, हे मन होय निंसग ।
बसन्त गुरु से ज्ञान ले, करो भेद को भंग ।५५।
भेद मान मन भूलिया, अपना ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त तन अभिमान कर, पड़े अविद्या कूप ।५६।
बसन्त देह अनात्मा, जड़ मिथ्या दुःख रूप ।
देह नहीं तू ब्रह्म है, चिदानन्द स्वरूप ।५७।
बसन्त ये मन कोयला, ऊजल हो किस भाय ।
ज्ञान अग्नि के संग से, लाल रंग हो जाय ।५८।
मैला मन बहु जन्म का, किस विधि निर्मल होय ।
गुरु मन्त्र अभ्यास कर, बसन्त यह मन धोय ।५९।

"कामादि विकार"

काम क्रोध मद ईर्षा, लोभ मोह अहंकार ।
बसन्त ये रिपु जीत के, पावो शान्ति भंडार ।१।
पाञ्च चोर तन नगर में, निशदिन करते वास ।

बसन्त सुख को हरत हैं, करलो ताहिं विनाश ।२।
काम बरोबर शत्रु को, बसन्त इस जग नाहिं ।
ब्रह्मचर्य के रतन को, नाश करत खिन माहिं ।३।
काम बड़ा बे शरम है, निर्भय पुनि बलवान ।
देखत सुन्दर नारि को, भुला देत सब ज्ञान ।४।
बसन्त मारे काम ने, देव दनुज नर धीर ।
विरला मारत काम को, हरिजन सन्त सुधीर ।
बसन्त जो जन जगत में, होवत काम अधीन ।
सो नर भोगत बहुत दुःख, होत दीन ते दीन ।
कामी कूकर से बुरा, कहते सन्त सुजान ।
बसन्त लोक परलोक में, भोगत दुःख महान ।७।
बसन्त कामी मनुष्य का, जहं तहं हो अपमान ।
ब्रह्मचर्य को राखते, देव करत सन्मान ।८।
बसन्त जीते काम के, होवत सब पर जीत ।
तन सुन्दर मन प्रसन्न हो, बड़े राम से प्रीत ।९।

बसन्त कामी मनुष्य का, कबहुं न कीजे संग ।
तांके संग से बड़त है, मन में काम उमंग ।१०।
बसन्त कामी मनुष्य से, भूल न कीजे बात ।
बात किये पुनि वेग ही, कामी नर बन जात ।११।
बसन्त कामी कामिनी, काम बड़ावे नीत ।
तांते दोनों को तजे, मन इन्द्रियन को जीत ।१२।
मन इन्द्रियन को जीत के, वश कर अपना आप ।
प्रसन्न हो गुरुदेव हरि, मिटे सकल संताप ।१३।
जीते सहस्त्र शूर को, शूरा सो नहिं होय ।
बसन्त जीते काम को, शूरा कहिये सोय ।१४।
काम कामना को कहत, वेद ग्रन्थ सब सन्त ।
सर्व कामना को तजे, बसन्त भज भगवन्त ।१५।
बसन्त जग की कामना दुःख मय लख सब त्याग ।
मन में धरे विराग को, हरि चरने अनुराग ।१६।
बसन्त हरि मय जगत लख, माता मय सब नारि ।

परम शान्ति को पाय तुम, जीते काम विकार ।१७

क्रोध और क्षमा

थोड़ी थोड़ी बात पर, बसन्त कर ना रोष ।
रोष करन से बढ़त है, मन में दुःख अरु दोष ।१।
क्रोध अग्नि से है बुरा, बसन्त देख विचार ।
क्रोध जलावे बार बहु, अग जारे इक बार ।२।
बसन्त जिस जन के हृदे, उपजत है यह क्रोध ।
सो नर नित जलता रहे, होत न तांको बोध ।३।
बसन्त जब इस जीव को, लगत क्रोध का बान ।
नाश होत शुभ कर्म तिस, भूल जात पुनि ज्ञान ।४।
क्रोध जिगर की रक्त हर, तन पीला कर देत ।
बसन्त होवहिं मलिन मन, तांते होय सचेत ।५।
बसन्त लोक परलोक का, क्रोध रिपु पहिचान ।
जग में जीव जलाय पुनि, भेजत नरक निदान ।६।
पाप बढ़त पुण्य घटत हैं, क्रोध किये जग माहिं ।

बसन्त यह विचार के, क्रोध करो मति काहिं ।७।

मान नम्रता प्रीति त्रय, वेग क्रोध से जात ।
बसन्त तांते यतन कर, तजो क्रोध को तात ।८।

बसन्त तीखी तेग से, जान क्रोध तलवार ।
एक बार के लगत ही, बेधहिं लाख हजार ।६।

बसन्त त्यागे क्रोध को, मन शीतल कर लेय ।
आप सुखी हो जगत में, औरों को सुख देय ।१०।

बसन्त त्यागे क्रोध को, क्षमा राखो चीत ।
मन में आवहिं शान्ति पुनि, सब जग होवहिं मीत ।

क्रोध अग्नि को शान्त कर शान्ती जल को डार ।
शान्त हृदे से मिलत है, बसन्त शान्ति अपार ।१२।

बसन्त जीते क्रोध को, चित्त में शान्ति पाय ।
मन को तज तुम और से, कबहुं न बैर बढ़ाय ।१३।

बसन्त आवहिं क्रोध जब, तबहिं हो हुशियार ।
धर्मनि ओर तुम देख के, शान्ति मन में धार ।१४।

जबहिं आवहिं क्रोध तब, मुख से और न बोल।
बसन्त हरि का नाम जप, ज्ञान हृदय में तोल।१५।
बसन्त सुनि कटु वचन को, सहन शीतला धार।
आप सर्व के हर्ष हित, मीठे वचन उच्चार।१६
बसन्त सूरा सो नहीं, तन पर सहे जो तीर।
क्रोध बाण को जो सहे, सो है अति बलवीर।१७।
बसन्त जीते और को, शूरा सो मति मान।
जो जीते निज क्रोध को, शूरा सो पहिचान।१८।
क्रोध जिते सुख होत है, बिन जीते सुख नाहिं।
बसन्त जीते क्रोध को, सुख पाओ मन माहिं।१९।
क्रोध शत्रु को मारिये, लेहि क्षमा हथियार।
बसन्त निर्भय होय के, सुमरो, सत्कर्त्तार।२०।
बसन्त क्रोधी मनुष्य का, होत न जग में मान।
किया कराया जात सब, अपयश होत महान।२१।
बसन्त क्रोधी जगत में, मित्र किसी का नाहिं।

बहुत वर्ष की प्रीति को, तोड़ देत खिण मांहि ।२२।
बसन्त क्रोधी मनुष्य का, होत न किससे प्यार ।
जगड़ा रगड़ा करत नित, पड़ा क्रोध के लार ।२३
बसन्त क्रोधी मनुष्य नित, मन में धर अभिमान ।
मात पिता गुरु संत का, करत सदा अपमान ।२४
बसन्त क्रोधी मनुष्य सम, पापी को जग नांहि ।
बिन कारन ही क्रोध कर, दुःख देत सब कांहि ।२५
बसन्त क्रोधी रैन दिन, बोलत कड़वे बैन ।
औरों को दुःख देत है, आप न पावत चैन ।२६।
जग में क्रोधी मनुष्य को, प्रत्यक्ष जान चंडाल ।
बसन्त मन बुद्धि भ्रष्ट हो, तांके संग तत्काल ।२७
बसन्त क्रोधी मनुष्य से, भूल न कीजे बात ।
क्रोध बड़े झगड़ा बड़े, होवे ना कुशलात ।२८।
बसन्त क्रोधी कृतघ्न, मानत ना उपकार ।
झूठे दोष लगाय के, उलटा कर अपकार ।२९।

क्रोध अग्नि सब जगत को, निशदिन रही जलाय।
बसन्त तांको भसम कर, ज्ञान अग्नि में पाय।३०।
क्रोध ज़हिर को मारिये, बूटी प्रेम मिलाय।
बसन्त अमृत होय वह, देत सूख पहुंचाय।३१।
रे मन त्यागे क्रोध को, हृदय कीजे शांत।
बसन्त शांति से सदा, तन की बाड़े कांत।३२।

"लोभ, मोह अहंकार व ईर्षा",

लोभ पाप का मूल है, लोभ करत है दीन।
बसन्त देवी गुण सबी, होत लोभ से क्षीन।१।
बसन्त लालच लोभ तज, मन में धर संतोष।
पाओ तुम संतोष से, जग में जीवन मोक्ष।२।
मोह महा दुःख देत है, बसन्त तन मन माँहि।
तांते निज परिवार से, मोह करो मत काँहि।३।
अर्जुन को रण भूमि में, मोह किया अति दीन।

भरत मोह से भा दुःखी, चित्रकेतु प्रबीन ।४।
मोह महातम रूप है, मन अंधा कर लेत ।
बसन्त सूझत ज्ञान नहिं, वास नरक में देत ।५।
धन जोबन परिवार पर, मत कीजे विश्वास ।
बसन्त ये थिर रहत नहिं, इक दिन होवत नाश ।६।
धन जोबन परिवार का, मत कर तू अभिमान ।
जप तप विद्या ज्ञान का, बसन्त हरि मद मान ।७।
विद्या धन गुण पाय के, कीजे नहिं अभिमान ।
बसन्त तीनों अनित्य हैं, यह निश्चय जिय जान ।८
स्वल्प सम्पति पाय तुम, काहिं करत अहंकार ।
बसन्त नासे ताहि के, होगा पुनि तिरस्कार ।९।
बसन्त बंधन हेतु है, इक झूठा अहंकार ।
दूर करो नमस्कार कर, पाओ मुक्ति द्वार ।१०।
मान जगत में पाय के, मत कर तू अभिमान ।
मान देह का जान के, बसन्त हो निर्मान ।११।

मान दुःखों की खान है, सुख खानी निर्मान ।
बसन्त तांते मान तजि, पाओ सुख महान ।१२।
बसन्त अंहता त्याग के, ममता को कर नाश ।
आतम में स्थित रहो, काल न आवे पास ।१३।
अहंता ममता राख जो, भोगत भोग विलास ।
बसन्त करत न हरि भजन, तिह डारत जम फास।
सकल पदार्थ ईश के, तेरे तो कछु नाहिं ।
बसन्त ममता मोह कर, क्यों फसते इस माहिं।
ममता में दुःख बहुत है, निर्ममता सुख रूप ।
बसन्त तांते ममत तजि, पाओ सुख स्वरूप ।१६।
मन की ममता मेट के, करो जगत के काम ।
दुःख न व्यापहिं देह में, मन में हो आराम ।१७।
मन की ममता मार कर, समता को उर धार ।
बसन्त समता नाव चढ़, भव सिन्धु उत्तरो पार ।
बसन्त जग दुःख रूप नहिं, ममता है दुःख कूप ।

रे मन ममता त्याग के, हो जा भूपन भूप ।१९।
ज्ञान ध्यान हरि भजन से, मन इन्द्रियन को जीत।
दूर करो दुःख द्वन्द सब, बसन्त होय अतीत ।२०।
बसन्त ईर्षा आग सम, जारत है दिन रैन।
तांते ईर्षा ना करो, जे चाहत हो चैन ।२१।
बढ़ते देखत और को, जो मन में उठती आग।
तांको ईर्षा कहत है, बसन्त सन्त सुजाग ।२२।
प्रथमे ईर्षावान नर, जलता अपने आप।
बाद जलावत और को, देकर बहु सन्ताप ।२३।
बसन्त ईर्षा रोग बड़, जा मन लागत सोय।
सो जन सुख पावत नहीं, दुःखी होत बहु रोय ।२४
ईर्षा मन में धार के, बुरा करो किस नांहि।
बसन्त ईर्षा वान नर, जलत नरक के मांहि ।२५।
बुरा करत जो ओर का, मन में ईर्षा राख।
बसन्त तांका हो बुरा, सन्त देत यह साख ।२६।

"भोजन विधि"

खाने पीने पहन में, समय गंवाया सोय ।
बसन्त अन्त पछतायेंगे, मानुष तन को खोय ।१।
खाय खाय फिर खायकर, तृप्त भई ना काहिं ।
बसन्त अब सन्तोष कर, शान्ति पाई मन माहिं ।२
बसन्त जेते मरत हैं, बहु भोजन के कीन ।
तेते मरत न कर्म से, यह निश्चय हम चीन ।३।
सीरा पूड़ी खीरणी, मांसवड़ी को देख ।
बसन्त खात जो पेट भर, मनुष्य न सो पशु पेख ।४
बसन्त पेटू मनुष्य को, आतम घाती जान ।
भूत पिशाच समान सो, धर्म भ्रष्ट पहिचान ।५।
बसन्त भोजन घृष्ट को, जे खावत संझ भोर ।
तांकी जठरा अग्नि नित, होत जात कमजोर ।६
मन्द अग्नि से रोग बहु, प्रकट होत शरीर ।

बसन्त भोजन की क्या,पी न सकत सो नोर ।७।
तांते सात्त्विक स्वच्छ पुनि, स्वल्प करो आहार ।
मन इन्द्रिय को दमन कर, पाओ सूख अपार ।८।
निशदिन भोजन खूब तुम चबा चबा के खाय ।
निश्चल मन पुनि शान्ति से, कह बसन्त सुख पाय ।६
नर जैसा अन्न खात है, तैसा ही मन होय ।
दीपक खावत तिमर को, देत कज्जल है सोय ।१०
जैसा भोजन तैस नर, होवत अपने आप ।
शुद्धाशुद्ध विचार बिन, भोगत पुण्य रु पाप ।११।
मांस मच्छी मति खाइये, पीओ नाँहि शराब ।
बसन्त ये दुःख रूप हैं,मन बुद्धि करत खराब ।१२।
इ भोगों को भोगते, तृष्णा बढ़ती जात ।
न्त पाते घृत जिम, अग्नि न होवे शान्त ।१३।
भोगों को मत भोगिये, भोग रोग को देत ।
त मन बुद्धि इन्द्रिय की, शक्ति को हर लेत ।१४

बसन्त भोगी देह को, मान आपना रूप ।
भोगे पांचों विषय को, पड़त नरक के कूप ।१५।
बसन्त भोगी देह से, हार खात जग माँहि ।
योगी ज्ञानी देह में, ममता राखत नाँहि ।१६।
बसन्त आशा भोग की, करत मनुष्य को दीन ।
इक आशा भगवान की, ताप हरत है तीन ।१७।
ब्रह्म सुधारस को तजे, पीवत जो विष नीर ।
बसन्त ऐसा मूंढ नर, होवत दुःखी अधीर ।१८।
भोगत ब्रह्मानन्द को, तज कर विषयानन्द ।
बसन्त जीवन मुक्त हो, रहत सोय स्वच्छन्द ।१९

व्यायाम

कसरत करो शरीर से, जे सुख चाहत मीत ।
विषय भोग को त्याग के, मन इन्द्रियन को जीत ।१
बिन कसरत नर देह में, कबहूं न पावत चैन ।

बसन्त भोगत रोग बहु, सन्त कहत अस बैन ।२।
बैठत बैठत देह में, मन्द अग्नि हो जात ।
बिन पाचन कब्जी बड़े, रोगी हो नित गात ।३।
कसरत कर होवत सबो, सुन्दर सीधे अंग ।
देह निरोगी शक्ति पुनि, मन में बड़त उमंग ।४।
रोगी नर पुनि अधिकतर, भोग न सकते भोग ।
बसन्त भोगत है सदा, हृष्ट पुष्ट जे लोग ।५।
चार पदार्थ पात सो, रहत निरोगी जोय ।
बसन्त रोगी मनुष्य पुनि, पावत कबहुं न सोय ।६।
सोवन जागन शौच्च पुनि, कसरत नावन ध्यान ।
खान पान पाठन पठन, नियमित कर सब काम ।७
जैसे माखी शहद की, काम करत दिन रात ।
बसन्त तैसे मत करो, करो नियम से तात ।८।
नियम करो संयम करो, कसरत प्राणायाम ।
तन मन के सब रोग हर, बसन्त पाय आराम ।९

"ज्ञान के साधन"

सत्संग कर सन्तोष धर, सदाचार मन धार ।
सत्य सरलता राख उर, बसन्त हो भवपार ।१।
सहन करे सेवा करो, सब को दे सन्मान ।
स्वार्थ तज समता धरे, बसन्त पाय कल्यान ।२।
नीच तृण सम हो रहो, तरु ज्यों दुःख संहार ।
दीन जनों को दान दे, सुमरो सत् करतार ।३।
बसन्त बुराई छोड़ कर, करो भले सब काम ।
सब जीवों को सुख दे, सुमरो सतगुरु नाम ।४।
जीवन सादी रहत है, फैशन करत विनाश ।
बसन्त कर तुम सादगी, मन में पाय हुलास ।५।
काया कञ्चन कामिनी, कीर्त्ति काम अरु क्रोध ।
बसन्त षट् रिपु जीत के पावो आतम बोध ।६।
काम क्रोध पुनि लोभ है, बसन्त नरक द्वार ।
दया दमन पुनि दान से, अपना करो उद्धार ।।७।

सेवा सुमरण दान से, जो जन राखत प्रेम ।
बसन्त तांका करत हरि, निशदिन योग रु क्षेम ।८

श्रद्धा संयम साथ कर, खोजो हृदय मांहि ।
बसन्त आतम देख ले, बाहिर भटकत काहि ।९।

सहानुभूति सरलता, सेवा करुणा प्रेम ।
इन पाञ्चों का राख उर, बसन्त पाओ खेम ।१०।

अहिंसा शम सन्तोष दम, क्षमा दया सत्य दान ।
इन पुष्पों के देन से, प्रसन्न हो भगवान ।११।

ब्रह्मचर्य शम सत्य दम, ब्रह्मज्ञान जिहं होय ।
बसन्त आत्म देव का, दर्शन पावत सोय ।१२।

बहुत जन्म के पुण्य जब, फल देत हैं तात ।
बसन्त तब इस जीव को, जिज्ञासा उपजात ।१३।

मोक्ष इच्छा मन धार के, जग से होय निसंग ।
बसन्त सत्गुरु संग कर, सुनिये ज्ञान प्रसंग ।१४।

कर दण्डवत प्रणाम पुनि, तन मन धन से सेव ।

प्रश्न कर गुरुदेव से, पाय निजातम भेव ।१५।
श्रद्धा से गुरु वचन सुनि, मनन करो दिन रात ।
जीव ब्रह्म की एकता, निश्चय करिये तात ।१६।
शान्त करे पाय शान्ति तुम, मन की छोड़ उपाधि ।
साधन साधे योग के, बसन्त लाय समाधि ।१७।
आशा तृष्णा वासना, चिन्ता ममता त्याग ।
संकल्प विकल्प छोड़ सब, बसन्त होय सुजाग ।१८
देवी गुन उर धार के, सुमरो सोऽहं नाम ।
ध्यान धरे गुरुदेव का, पाओ सुख का धाम ।१९।
बसन्त सीधा बैठ के, आतम में मन लाय ।
अर्थ सहित गुरु मन्त्र जप, पूर्ण पद को पाय ।२०।
बैठा अकेला नाम जप, मन को करके शान्त ।
दर्शन पा निज देव का, तोड़े भेद भ्रान्त ।२१।
वृत्ति ब्रह्मा कार कर, निर्गुण लाय समाधि ।
बसन्त अपना रूप लख, आनन्द पास अगाधि ।२२

सत्य अहिंसा न्याय से, करलो सद् व्यवहार ।
बसन्त समता भाव से, पावो मोक्ष द्वार ।२३।
हर्ष शोक को त्याग के, समता में चित्त जोड़ ।
बसन्त सब में ब्रह्म लख, भेद भरम को तोड़ ।२४
बसन्त सब का राग तज, झूठा जान विलास ।
एकाग्र मन से करो, अहं ब्रह्म अभ्यास ।२५।
अहं ब्रह्म उर राख के, बाह्य भक्त जाय ।
आतम मय जग जान के, बसन्त सेव कमाय ।२६।
तन मन धन से सेव कर, सबको हरि वपु जान ।
बसन्त आप निर्मान हो, सबको दे सन्मान ।२७।
शान्ति सुमति को राख मन, जीत गये सब सन्त ।
बसन्त हृदे धार हठ, हार गये बलवन्त ।२८
सब की ममता त्याग जिन, शुद्ध सेवा मम कोन ।
गोविन्द गोपियुन से कहा, मैं हुं तिन आधीन ।२९
जिस सुख को तुम खोजते, सो है तेरा रूप ।

अन्तर मुख वृत्ती करो, पावो सुख स्वरूप ।३०।
कर्तव्य बुद्धि से कर्म कर, धन पा धर सन्तोष ।
भोग भोग आसक्ति बिन समता से पा मोक्ष ।३१।
बसन्त पहिले जगत में, अपना आप सुधार ।
पीछे दे उपदेश पुनि, औरां करो उद्धार ।३२।

"वैराग्य"

इन्द्रजाल वत् जगत यह मिथ्या है सत् नांहि ।
बसन्त तांका संग तजि, हरि सुमरो मन मांहि ।१
पीर अमीर फकीर पुनि, राजा रंक कंगाल ।
मर कर लेते खफन सब, नहिं ले जाते माल ।२।
गर्भ जन्म दुःख व्याधि दुःख, जरा मरण दुःख जान ।
बसन्त इनके हरन हित, पावो आतम ज्ञान ।३।
काया माया की क्या, राखत हो मन आश ।
बसन्त बादल छाय जिम, इक क्षण होवत नाश ।४

काया माया मोह तज, काम क्रोध अहंकार ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, सुमरो सिरजणहार ।५।
मात पिता सुत दार मित, बहिन बन्धु पुनि भ्रात ।
बसन्त स्वार्थ से सबो, प्रीति करत दिन रात ।६।
सुख लख बैठत साथ में, बसन्त सब परिवार ।
दीन दुःखी जब देखते, घर से देत निकार ।७।
देह गेह धन दार सुत, मित्र बन्धु परिवार ।
बसन्त तेरे में नहीं, तांते जय करतार ।८।
बसन्त देखा शोधि के, सारा यह संसार ।
सत्गुरु औ करतार बिन, स्वारथ के सब यार ।९।
सबसे नाता तोड़ के, सत्गुरु से तुम जोड़ ।
बसन्त नित हरि नाम जप, आन तरफ मत दौड़ ।१०
मीठा खारा विषय रस, बार बार तुम लीन ।
बसन्त तृप्ति ना भयी, बीत गये पन तीन ।११।
बालापन यौवन गया, बूढ़ा भया शरीर ।

बसन्त अब तो नाम जप, धारे मन में धीर ।१२।

भोग रोग को खान है, काम जगत का बीज ।
बसन्त त्यागे द्वन्द्व को, नाम हृदय में सींच ।१३।

जन्म मरण यौवन जरा देते दुःख महान ।
बसन्त दुःख के हरण हित, सुमरो श्री भगवान ।

तपते लोह कड़ाह में, वस्तु तपत जिम तात ।
बसन्त तैसे जगत में, जीव तपत दिन रात ।१५

कंचन कीर्त्ती, कामिनि, पीव प्रसन्न दे नाँहि ।
बसन्त इनको जो तजे, सो पीय माँहि समाँहि ।१६

कंचन कामिनि कीर्त्ती, तीनों दुःख का रूप ।
बसन्त इनको त्याग के, पावो सुख स्वरूप ।१७।

बसन्त जग का राग तज, जान जगत को नाश ।
सत्गुरु का ध्यान, कर सोऽहं का अभ्यास ।१८

बसन्त सबको त्याग के, मन में धार विराग ।
श्रद्धा से सत्संग का, हरि में कर अनुराग ।१९

जो सुख है वैराग्य में, सो विषयों में नाहिं ।
बसन्त मैने शोध के, देखा अनुभव माहिं ।२०।
बसन्त जिस पर ईश को, पूरण कृपा होय ।
जग से वेग विराग को, पावत है नर सोय ।२१।

"धैरर्य"

थोड़ो थोड़ो विपति में, बसन्त मत घबराय ।
सहन कर दुःख द्वन्द्व का, धीर वीर बन जाय ।१
सुख पीछे दुःख होत है, दुःख पीछे सुख होय ।
बसन्त दिन अरु रात जिम, ताहि न मेटत कोय ।२
बसन्त सुख दुःख कर्म से, पावत है सब कोय ।
तांते तुम धीरज करो, सुखी दुःखी मत होय ।३।
बसन्त मन धीरज धरो, सम्पत्ति विपदा माहिं ।
सुख दुःख मिलता कर्म से, शोक न कीजे कांहि ।४
बसन्त नाशहि शोक से, धीरज।छवि सुख ज्ञान ।

तांते शोक न कीजिये, शत्रु शोक को जान ।५।
शोक समय मत शोक कर, हर्ष समय अह्लाद ।
बसन्त दोनों छोड़ के, करलो हरी को याद ।६।
हर्ष शोक से होत दुःख, सम चित्त से सुख होय ।
बसन्त तांते द्वन्द तज, सम सेजा पर सोय ।७।
बसन्त राग अरु रोष को, प्रबल दुश्मन जान ।
दुःख हो धारे द्वन्द के, जीते सूख महान ।८।
ना किससे कर राग तुम, ना किससे कर द्वेष ।
बसन्त आतम एक लख, सम चित्त रहो हमेश ।९।
द्वेष करो नित जगत से, आतम में अनुराग ।
बसन्त ऐसा द्वन्द कर, जग में हो बड़भाग ।१०।
भूत काल को छोड़ दे, भावी करना याद ।
वर्तमान में वर्तिये, बसन्त बिना विखाद ।११।
मरण शूर को तृण सम, दाता को धन प्रान ।
बैरागी को नारि है, त्यागी को जग जान ।१२।

बसन्त तुम निर्द्वन्द हो, द्वन्द करो सब दूर ।
इक रस चित्त से ब्रह्म का, भजन करो भरपूर ।१३

बसन्त पुण्य अरु पाप का, फल सुख दुःख पहिचान ।
धीर धरे रहु शांत में, सुमरो श्री भगवान ।१४।

जीवन की सफलता

सेव बड़ों की करत जो, होय सदा निष्काम ।
बसन्त पर उपकार पुनि, धन्य पुरुष तिह नाम ।१।

दान धर्म सत्कर्म में, जांकी आयू जात ।
बसन्त धन धन सोय जो, भजन करत दिन रात ।२

नारि पतिव्रत पुत्र युत, सत्य धर्म जिह पास ।
बसन्त सेवे सन्त को, जन्म सफल है तास ।३।

बसन्त सतगुरु सन्त से, जो जन कर अनुराग ।
सत्संग सुन सेवा करे, सो जन है बड़भाग ।४।

सतगुरु की सेवा कर, होय सदा निर्मान ।

बसन्त चिन्तन ब्रह्म का, बड़भागी सो जान ।५।
बसन्त मीठे वचन कह, जो सबको सुख देत ।
बड़भागी सो मनुष्य है, निश दिन रहत सचेत ।६
बसन्त अपने देश हित, देत धर्म में प्रान ।
दीन जनों को प्यार दे, बसन्त सो धन जान ।७।
ब्रह्मचर्य की राख जो, जीते तन मन प्रान ।
वेद विद्या को पढ़त है, बसन्त सो धन जान ।८।
झूठ जगत को जान के, धारे मन वैराग ।
सत्संग में नित जात है, बसन्त सो बड़भाग ।९।
विषय वासना त्याग जो, सुमरत सत्गुरु नाम ।
बसन्त जीवन सफल तिहं, पावत सो हरि धाम ।१०
क्रोध अग्नि को त्याग जो, क्षमा राखत चीत ।
बसन्त सो नर धन्य जो, करत जीभ पर जीत ।११
जो माया वश होत नहिं, राखत मन सन्तोष ।
बसन्त सो बड़भाग जन, रहत सदा निर्दोष ।१२।

ज्ञान गंग में नाय के, हरत पाप मल जोय ।
अपना मन निर्मल करे, बसन्त धन है सोय ।१३
बसन्त आते द्वन्द जो, सुख दुःख मानत नाहिं ।
बड़भागी सो रहत जो, स्थित आतम माहिं ।१४
राग द्वेष को त्यागके, रहत शान्त चित्त जोय ।
सुख दुःख में समभाव हो, बड़भागी है सोय ।१५
तन मन धन का भाव तज, जीव ब्रह्म इक जान ।
निर्द्वन्द स्वच्छन्द हो, बसन्त सो धनजान ।१६।

दान महात्म्य

मुख्य कर्म है मनुष्य का, बसन्त देना दान ।
दान बिना नहिं मनुष्य का, होगा कब कल्यान ।१
हरि ने दीना तोहि धन, पूर्व पुण्य अनुसार ।
सफल करे सो दान से, पावो स्वर्ग द्वार ।२।
धन सम्पत्ति को पाय तुम, करलो परोपकार ।

दान बिना धन जगत में, बसन्त है बेकार ।३।

काया माया थिर नहीं, यह निश्चय मन मान ।
बसन्त तांते चेत कर, निशदिन करले दान ।४।

धन की जितनी शक्ति पुनि, में श्रद्धा होय ।
बसन्त उतना दान कर, सफल करो धन लोय ।५।

सर्व लोक वश होत हैं, बसन्त दीने दान ।
शत्रु मित्र बन जात है, दान करत अघ हान ।६।

मधुर वचन कह नम्र हो, बसन्त दे दो जान ।
तांको जहं तहं मिलत है, यश सुख श्री भगवान ।७

बसन्त दानी जगत में, यश का भागी होत ।
लोक इसी परलोक में, दाता सुख से सोत ।८।

गौरव हो धन दान से, कृपणता से नांहि ।
बसन्त तांते दान दे, सदा सुपात्र मांहि ।९।

पात्र कुपात्र शोधि के, देहि दान बिन दाप ।
धेनु घास खाय दूध दे, दूध खाय विष साँप ।१०।

दीन दुःखी मुहताज को, अनजल वस्त्र देह ।
बसन्त आगे मिलहि तुझ, राख भरोसा एह ।११।
भूखे भोजन वस्त्र दे, नंहे प्यासे नीर ।
निर्गुन को गुण ज्ञान दे, बसन्त हर मन पीर ।१२।
बसन्त तेरे पास जो, विद्या धन गुण आहि ।
सोय सुपात्र देख दो, कृपण बन मत काहि ।१३
बसन्त खाय खिलाय पुनि, अन्न का खोल भंडार ।
दाता तुम को देत हैं, तू भी बन दातार ।१४।
आशवान की आश को, पूरन करता जोय ।
बसन्त तांकी आश भी, हरि से पूरन होय ।१५।
घर में धन को राख जो, देख देख हर्षात ।
बसन्त मर कर द्रव्य सो, छोड़ अकेला जात ।१६।
धन में ममता राख तुम, सर्प योनि मत पाय ।
बसन्त त्यागे द्रव्य को, देवलोक में जाय ।१७।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, दान करो निज हाथ ।

और सर्व रह जात यहं, धर्म चले तब साथ ।१८।

बसन्त तुम निष्काम हो, धन से कर शुभ काम ।
मैला मन उज्जवल करो, पावो आनन्द धाम ।१९

हरि की सम्पत्ति जान के, हरि को ही तुम देह ।
बसन्त ममत न राख तुम, सीख धरो मन एह ।२०

हरि की सम्पत्ति है सबी, तेरी तो कछु नाँहि ।
बसन्त तांते ममत तज, खाय खिलाय सब कांहि ।

बसन्त है धन दान से, उत्तम दान सन्मान ।
तांते भी अति उत्तम है, दान ब्रह्म का ज्ञान ।२२।

दानी को फिर देत है, बसन्त हरि धन दान ।
कर्जा वह राखत नहीं, प्रत्यक्ष देख प्रमान ।२३।

बसन्त दीने द्रौपदा, वस्त्र टुकड़े चार ।
राज सभा में कृष्ण ने, दीने वसन अपार ।२४।

दीन सुदामा कृष्ण को, मूठी तंदुल दोय ।
हरि ने दीने स्वर्णमय, महल जान सब कोय ।२५।

आतिथ्य सत्कार

अतिथी को सन्मान दे, यथा शक्ति कर सेव।
बसन्त मत अपमान कर, जानो अतिथी देव।१।
प्रसन्न कर मृदु वचन से, प्रेम सहित कर बात।
बसन्त भोजन आदि से, सेव करो दिन रात।२।
प्रसन्न चित्त से करत जो, अतिथी का सत्कार।
पावत यश इस लोक में, सुख पर लोक मंझार।३।
बसन्त जिनके द्वार से, अतिथी खाली जात।
उसको अपना पाप दे, पुण्य सबी ले जात।४।
अतिथी का स्वरूप धर, हरि आवत घर माँहि।
श्रद्धा से सेवा करो, बसन्त भूलो नाँहि।५।
अतिथी आदर करत नहिं, उलटा करत क्रोध।
तांके नाशत पुण्य सब, बसन्त सुन प्रबोध।६।
बसन्त प्रथम अतिथी को, भोजन सरूचि खिलाय।
पीछे तुम परिवार युत, शीत प्रसादी खाय।७।